Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha was founded by the Father of the Nation, Mahatma Gandhi, in 1918, to propagate Hindi as the common link language in the Southern States. Gandhiji sent his youngest son Devdas Gandhi in 1918 to Madras to establish the Sabha and also to serve as the first Hindi Pracharak.

The Sabha was inaugurated at a formal function in the Gokhale Hall in George Town, Madras City, on June 17, 1918, by Dr. Annie Besant. The first Hindi class was conducted by Devdas Gandhi. The Sabha was registered as an autonomous Society, under the Central Registration of Societies Act, 1860, with Mahatma as the first President of the Sabha.

Four provincial Sabhas were established in 1936 as the branches of the Central Sabha to intensify the movement. In the same year, the Sabha, which was functioning hitherto from rented buildings, moved to its own building in T. Nagar. The new building was inaugurated on October 7, 1936 by Pandit Jawaharlal Nehru and Sardar Vallabhai Patel.

Gandhiji continued as the founder President till his last breath and was succeeded by Babu Rajendra Prasad. After that, leaders such as Lal Bahadur Shastri, Smt. Indira Gandhi, Rajiv Gandhi, P.V. Narasimha Rao, R. Venkataraman, Dr. B.D. Jatti, and Justice Ranganath Mishra succeeded as Presidents of the Sabha.

Government of India has recently declared the house in the Sabha premises that was used by Gandhiji for his stay for ten days in 1946 as one of the forty Gandhi Heritage Sites in India. The Sabha is planning to establish a permanent Gandhi Museum in this house.

The primary activity of the Sabha is propagation of Hindi in the Southern States through the network of Pracharaks. Examinations were being held regularly from 1922 to enable the students to assess their proficiency in Hindi. The first degree level examination "Rashtrabhasha Visharad" was conducted and the first Convocation of the Sabha was also held in 1931. The convocation address was delivered by Kaka Kalelkar. Prominent leaders and Hindi scholars such as Munshi Premchand, Babu Purushottam Das Tandon, Dr. Sarojini Naidu, Pattabi Seetharamiah, Acharya Vinoba Bhave, Dr. Zakir Hussain, B. Ramakrishna Rao, Moturi Satyanarayana, Babu Jagajeevan Ram, Dr. Ramdhari Singh Dinkar and Baba Ganga Saran Singh participated and delivered convocation address in the subsequent years. The Sabha today, is the largest Institution teaching Hindi in South India and nearly seven lakh students appear for the examinations conducted every year.

The Sabha was conferred the status of an Institution of National Importance by the Government of India in 1964 by the Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha Act, 1964. The Act has enabled the Sabha to award degrees, diplomas and certificates in proficiency in Hindi and teaching of Hindi. The Sabha established the Post Graduate and Research Institute (PG&RI) for higher learning in the year 1964 that was inaugurated by Lal Bahadur Shastri. Now, about 6,000 persons are awarded various Degrees - including Ph.D. and D.Litt - Diplomas and Certificates by the PG&RI of the Sabha.

The Sabha is conducting Hindi teacher training and B.Ed. courses in Hindi for increasing the availability of Hindi teachers in South India, through its 11 B.Ed. colleges and 21 teacher training colleges. As many as 85,904 teachers who passed out of these colleges are now working as Hindi teachers in several schools. In addition, the Sabha is also conducting distance education courses in Hindi medium, with due approval of the Distance Education Bureau with an annual enrolment of about 6,000 students.

Another landmark in the history of the Sabha was the establishment of a National Hindi Research Library in 1991 with financial assistance from the Government of India. The National Hindi Research Library has more than one lakh titles in Hindi literature and subscribes to 150 newspapers and periodicals and is one of the biggest of its kind.

The Sabha is a leading publisher of Hindi books in South India and has so far published more than 540 books in Hindi Language from text books for Sabha examinations to great literary works. Bi-lingual and tri-lingual dictionaries have been edited and published by the Sabha. The Sabha has its own Press which has won Rashtrapati Award for excellence in printing. Several magazines such as "Hindi Prachar Samachar", "Sravanthi", "Bharathavani", "Keral Bharathi", "Hindi Patrika", "Dakshin Bharat" and "Bahubrahi" are published by the Sabha and its branches and all these magazines are registered under RNI.

The Sabha is the largest Hindi teaching organization in the country, teaching Hindi to around seven lakh non-Hindi speaking Indians. The Sabha has developed a vast network of about 20,000 active grass root level pracharaks. The Sabha is the biggest contributor to the pool of Hindi teachers in south India, having turned out around 90,000 Hindi teachers through its B.Ed and school teacher training institutions.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras on its centenary.

Credits:

Text	:	Based on information received from proponent
Stamp/ FDC/ Brochure	:	Smt. Alka Sharma
Cancellation Cachet		

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS

विवरणिका BROCHURE

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

दक्षिण के राज्यों में हिन्दी को आम संपर्क भाषा के रूप में प्रचारित करने हेतु राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा 1918 में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की गई। गांधीजी ने 1918 में अपने सबसे छोटे पुत्र देवदास गांधी को सभा को स्थापित करने तथा प्रथम हिन्दी प्रचारक के रूप में सेवा के लिए मद्रास भेजा था।

मद्रास शहर के जॉर्ज टाउन स्थित गोखले हॉल में 17 जून, 1918 को आयोजित एक औपचारिक समारोह में डॉ. ऐनी बेसेन्ट द्वारा सभा का उद्घाटन किया गया। देवदास गांधी द्वारा हिन्दी की प्रथम कक्षा संचालित की गई। महात्मा गांधी को सभा का प्रथम अध्यक्ष बनाकर, सेंट्रल रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसायटीज एक्ट, 1860 के तहत सभा का पंजीकरण स्वायत्तशासी सोसायटी के रूप में कराया गया।

हिन्दी प्रचार आंदोलन को और सघन करने के उद्देश्य से 1936 में केन्द्र सभा की शाखाओं के रूप में चार प्रांतीय सभाओं की स्थापना हुई। इसी वर्ष, किराए के भवन में कार्यरत सभा टी.नगर में अपने स्वयं के भवन में आ गई। नए भवन का उद्घाटन 7 अक्तूबर, 1936 को पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा किया गया।

गांधीजी अपने जीवन की अंतिम सांस तक इसके संस्थापक अध्यक्ष रहे और उनके निधन के बाद बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने अध्यक्ष पद संभाला। उनके बाद, श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, पी.वी. नरसिम्हा राव, आर वेंकटरामन, डॉ.बी.डी. जत्ती और न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र जैसे नेताओं ने सभा के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

अभी हाल ही में, भारत सरकार ने सभा परिसर में स्थित उस भवन को, जिसमें गांधी जी 1946 में 10 दिनों तक रहे थे, गांधी हेरिटेज साइट घोषित किया है। सभा इस भवन में एक स्थायी गांधी संग्रहालय स्थापित करने की योजना बना रही है।

सभा का मुख्य कार्य अपने प्रचारकों के नेटवर्क के माध्यम से दक्षिण के राज्यों में हिन्दी का प्रचार करना है। छात्रों की हिन्दी में निपुणता का मूल्यांकन करने हेतु वर्ष 1922 से लगातार विभिन्न परीक्षाएं आयोजित की जाती रही हैं। डिग्री स्तर की प्रथम परीक्षा "राष्ट्रभाषा विशारद" 1931 में आयोजित की गई और इसी वर्ष सभा के प्रथम दीक्षान्त समारोह का आयोजन भी हुआ। दीक्षान्त भाषण काका कालेलकर द्वारा दिया गया। प्रसिद्ध नेताओं और हिन्दी विद्वानों जैसे मुंशी प्रेमचंद, बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन, डॉ. सरोजिनी नायडू, पट्टाभी सीतारमैय्या, आचार्य विनोबा भावे, डॉ. जाकिर हुसैन, बी. रामकृष्ण राव, मोटूरी सत्यनारायण, बाबू जगजीवन राम, डॉ. रामधारी सिंह दिनकर और बाबू गंगाशरण सिंह ने बाद के वर्षों में दीक्षान्त समारोहों में भाग लिया और दीक्षान्त भाषण दिया। सभा, आज दक्षिण भारत में हिन्दी पढ़ाने वाली सबसे बड़ी संस्था है और लगभग सात लाख छात्र प्रतिवर्ष सभा द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं।

भारत सरकार ने वर्ष 1964 में "दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा अधिनियम, 1964" द्वारा सभा को राष्ट्रीय महत्व की संस्था का दर्जा दिया। इस अधिनियम ने सभा को हिन्दी में पढ़ाई, हिन्दी में निपुणता, डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र देने हेतु अधिकार प्रदान किया। सभा ने हिन्दी में उच्च शिक्षा के लिए वर्ष 1964 में स्नातकोत्तर और शोध संस्थान (पीजी एंड आरआई) की स्थापना की, जिसका उद्घाटन श्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा किया गया। वर्तमान में, स्नातकोत्तर और शोध संस्थान द्वारा लगभग 6000 व्यक्तियों को पीएचडी और डी-लिट डिग्री एवं अन्य डिप्लोमा और प्रमाणपत्र प्रदान किये जा चुके है।

सभा, दक्षिण भारत में हिन्दी शिक्षकों की उपलब्धता में वृद्धि के लिए अपने 11 बी.एड. कॉलेजों और 21 शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेजों के माध्यम से हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण और बी.एड. पाठ्यक्रम भी चला रही है। लगभग 85904 शिक्षक, जो इन कॉलेजों से उत्तीर्ण हुए हैं, आज विभिन्न विद्यालयों में हिन्दी शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। इसके साथ-साथ, सभा हिन्दी माध्यम से दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम भी चला रही है, जिसमें दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो के अनुमोदन से प्रतिवर्ष लगभग 6000 छात्र नामांकित होते हैं।

सभा के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण मील स्तंभ है- 1991 में भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से स्थापित "राष्ट्रीय हिन्दी शोध पुस्तकालय"। राष्ट्रीय हिन्दी शोध पुस्तकालय में हिन्दी साहित्य की एक लाख से भी अधिक पुस्तकें हैं और यहां 150 समाचार पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से आती हैं, जो इसे देश में अपने प्रकार का सबसे बड़ा पुस्तकालय बनाती हैं।

दक्षिण भारत में हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन में भी सभा सबसे अग्रणी है और अब तक हिन्दी भाषा में 540 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है, जिनमें सभा की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम की पुस्तकें तथा हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। द्विभाषी और त्रिभाषी शब्दकोशों का संपादन-प्रकाशन भी सभा द्वारा किया गया है। सभा की अपनी प्रेस है, जिसे उच्चकोटि के मुद्रण कार्य के लिए राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया है। सभा और इसकी शाखाओं द्वारा कई पत्रिकाएं जैसे "हिन्दी प्रचार समाचार" "स्रवन्ती", "भारतवाणी", "केरल भारती", "हिन्दी पत्रिका", "दक्षिण भारत" और "बहुव्राहि" प्रकाशित की जाती हैं और ये सभी पत्रिकाएं 'आरएनआई' के अंतर्गत पंजीकृत हैं।

सभा देश में हिन्दी पढ़ाने वाली सबसे बड़ी संस्था है, जो प्रति वर्ष लगभग सात(7) लाख हिन्दीतर भाषी भारतीयों को हिन्दी पढ़ाती है। सभा ने जमीनी तौर पर जुड़े लगभग 20,000 सक्रिय हिन्दी प्रचारकों का विशाल नेटवर्क विकसित किया है। सभा दक्षिण भारत में सबसे अधिक हिन्दी शिक्षकों का योगदान करने वाली संस्था है। इन शिक्षकों की संख्या लगभग 90,000 है जो सभा के बी.एड. कालेज और विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के द्वारा प्रशिक्षित हैं।

डाक विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के शताब्दी वर्ष पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती अलका शर्मा
विवरणिका/विरूपण

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	603000
Stamps Printed	:	603000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00